प्रश्न :1 निम्न लिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए :-

(i) विद्यालय विषय के रूप में सामाजिक विज्ञान के लक्ष्य :-

किसी भी कार्य की तब कोई उपयोगिता नहीं होती, जब तक उसका निश्चित प्रयोजन या उद्देश्य न हो। इसलिए यह आवश्यक ही जाता है कि किसी भी कार्य को अच्छी तरह से पूरा करने के लिए उसका निश्चित लक्ष्य भी पहले से निर्धारित होना चाहिए। उद्देश्यों के अभाव में किसी भी कार्य को एक निश्चित दिशा प्रदान नहीं की जा सकती है। व्यक्ति जब तक उस लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर लेता है, जो व्यक्ति की शैक्षिक क्रियाओं को प्रभावित करता है। तब तक वह चिंतन करता रहता है तथा नए-नए योजनाएँ बनाता रहता है। जैसे-जैसे वह लक्ष्य के समीप पहुँचता जाता है, उसकी क्रियाओं में परिवर्तन होता रहता है। इसलिए शिक्षा प्राप्त करने में उद्देश्यों का बड़ा महत्व होता है। सामाजिक विज्ञान-विषय के शिक्षण से पहले यह जान लेना अति आवश्यक है कि इसे क्यों पढ़ाया जाता है। इसके अध्ययन बालक में क्या परिवर्तन आ सकते हैं, इसे पहले से निर्धारण करना आवश्यक होता है।

सामाजिक विज्ञान के प्रमुख लक्ष्य नागरिकी के मूल्यों तथा आदर्शों को प्रतिबिम्बित करते हैं। इसके साथ-2

ये लक्ष्य एक प्रजातांत्रिक समाज में व्यक्ति या मानव को एक सफल जीवन हेतु आवश्यक ज्ञान तथा कौशलों से संबंधित जानकारी भी देते हैं।

सामाजिक विज्ञान के लक्ष्य :-

सामाजिक विज्ञान के अध्यापन के मुख्य लक्ष्यों को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है —

1. मानव समाज की व्याख्या करना।
2. ज्ञान की प्राप्ति।
3. अच्छी नागरिकता।
4. चरित्र-निर्माण।
5. उचित अभिवृत्तियों का विकास।
6. आदतों तथा कौशलों का निर्माण।
7. सामाजिक परिवर्तन के लिए तैयार करना।
8. बालकों के जीवन को उनके वातावरण के अनुसार ढालना।
9. अवकाश के समय के सदुपयोग में सहायक।
10. व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए।
11. समस्या के समाधान की योग्यता का विकास।

Scanned with CamScanner

(ii)

शिक्षा शास्त्रीय विश्लेषण का अर्थ

शिक्षाशास्त्र विश्लेषण नामक पद दो शब्दों से लेकर बना है - शिक्षाशास्त्र तथा विश्लेषण। साधारण भाषा में इस पद का अर्थ होता है, एक ऐसा विश्लेषण जो शिक्षाशास्त्र पर आधारित होता है। यह वह प्रक्रिया होती है, जिसके माध्यम से किसी विषय-वस्तु विशेष को उसके भागों, अवयवों तथा तत्वों में बांटा जाता है।

अर्थ :-

विज्ञान आज हमारे जीवन के सभी पहलुओं को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित कर रहा है। हम अपने दिन-प्रतिदिन के जीवन में, अपने कार्यों को सही तरीके से करने के लिए तथा अपने आराम तथा विकास के लिए विज्ञान की सेवाएं लेते हैं। इससे हमारी शक्ति और समय की काफी बचत होती है। कम समय व लागत में कम से कम समय से ज्यादा से ज्यादा और बढ़िया से बढ़िया परिणामों की प्राप्ति करना सिर्फ विज्ञान के द्वारा ही संभव है। विज्ञान की यह प्रकृति है कि वह अपने प्रयोग से कम से कम साधनों को खर्च करके ज्यादा से ज्यादा अच्छे परिणामों को प्राप्त किया जा सकता है। इसलिए अधिगम शिक्षण के विज्ञान में ऐसी क्षमता और शक्ति होनी चाहिए कि उसका उपयोग एक अध्यापक अपने शिक्षण से ज्यादा से ज्यादा कर सकें।

Scanned with CamScanner

शिक्षण के विज्ञान या शिक्षाशास्त्र के प्रयोग से यह उम्मीद की जाती है। कि शिक्षण से ज्यादा से ज्यादा कर सके। शिक्षण कार्य मे सीमित साधनों के साथ हमें बढ़िया से बढ़िया शिक्षण परिणामों को प्राप्त करने मे पूरी-पूरी सहायता मिल सके। सारांश रूप मे हम यह कह सकते है कि शिक्षण के शिक्षाशास्त्रीय विश्लेषण से हमारा अर्थ अध्यापक के द्वारा प्रयोग उन सभी शिक्षा विधियों तथा प्रविधियों से है, जिनके माध्यम से अध्यापक अपने शिक्षण कार्य को ज्यादा सरलता और प्रभावी तरीके से पूर्ण करने मे सक्षम हो पाता है।

निष्कर्ष :- उपरोक्त अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षाशास्त्रीय विश्लेषण इकाई या विषय सामग्री को पढ़ाने की एक वैज्ञानिक व क्रमबद्ध व्यावहारिक शब्दावली है। इसे अध्यापक शिक्षण से पहले व्यावहारिक शब्दावली है। इसे अध्यापक शिक्षण से पहले व्यावहारिक शब्दावली मे तैयार करता है। तथा कक्षा-कक्ष मे इसे क्रियात्मक रूप प्रदान करता है।

Scanned with CamScanner

ई-संसाधनों के उपयोग

(iii) इलेक्ट्रॉनिक तथा कम्प्यूटर से होने वाले तकनीकी विकास ने शिक्षण अधिगम का स्वरूप पूर्णतः बदल दिया है। आज का युग सूचना क्रांति का है। इसलिए शिक्षण अधिगम सामग्री में इलेक्ट्रॉनिक तथा कम्प्यूटर तकनीक पर आधारित सामग्री की उपयोगिता निरंतर बढ़ती जा रही है। इस तरह के साधन में ब्लॉग वाइड वेब तथा सोशल नेटवर्किंग जैसी कम्प्यूटरीकृत साधन प्रमुख रूप से शामिल है।

i) ब्लॉग (Blog) :- आज हमारी सामान्य जिंदगी में भी फेसबुक, व्हट्सप, ट्वीटर तथा ब्लॉग जैसे कुछ ऐसे शब्द है, जिनका पता नहीं दिन में हम कितनी बार इस्तेमाल करते है। इनका इस्तेमाल बच्चे से लेकर बड़ो तक, शिक्षित से लेकर अशिक्षित तक तथा अमीर से लेकर गरीब तक आम हो गया है। इसलिए शिक्षा के क्षेत्र में भी इनका लाभ उठाया जा सकता है।

शिक्षा में उपयोगिता

i) बालकों के माता-पिता या अभिभावकों के साथ सम्पर्क स्थापित करने में ये शैक्षिक ब्लॉग अध्यापक व विद्यालय की काफी सहायता करते है।

ii) इसके माध्यम से अध्यापक महत्वपूर्ण सूचनाओं को अपने साथियो, बालकों तथा उनके अभिभावको से साथ में बांट सकता है।

Scanned with CamScanner

iii. किसी विशिष्ट विषय को पढ़ाने मे हलॉग अध्यापक की काफी सहायता करते है।

iv. इस कम्प्यूटरीकृत उपकरण की सहायता से विविध विचारों तथा उपकरणो का सरलता से पता लगाया जा सकता है।

v. विश्व के सभी देशो मे बालक इससे लेखन व सम्प्रेषण कौशल का विकास कर सकते है।

(2) वर्ल्ड वाइड वेब :- सूचना क्रांति के इस युग मे इन्टरनेट की उच्च स्तरीय सेवाओ को प्रस्तुत करने मे वर्ल्ड वाइड वेब हमारी काफी सहायता करता है। सामाजिक विज्ञान मे शिक्षण मे सहायक कुछ वेबसाइट निम्न है।—

i. शिक्षकों व बालको को मानचित्रावली संबंधी सम्पूर्ण जानकारियाँ नामक वेबसाइट से प्राप्त हो सकती है। मानचित्रों को समझने मे यह बालको की काफी सहायता करती है।

ii. बालको को राजनीतिक शब्दावली, सीमा का विस्तार, राजधानिया व अन्य प्रशासनिक संस्थाओं के विषय मे जानकारी देने वाली वेब साइट है। यह विश्व की राजनीतिक मानचित्र के नाम से प्रसिद्ध है।

iii. नामक वेब साइट से हमें अधिगम सिद्धांतो की उपयोगी जानकारी प्राप्त होती है। यह शिक्षक तथा बालक दोनों के लिए ही समान रूप से उपयोगी होता है।

iv. शैक्षिक उद्देश्यों के व्यावहारिक शब्दावली को समझाने वाली वेब साइट है। इससे उद्देश्यों की व्यावहारिक शब्दावली को समझने मे काफी सहायता मिलती है।

Scanned with CamScanner

(3) सोशल नेटवर्किंग :- फेसबुक, ट्वीटर, यू-ट्यूब व व्हट्सप जैसे खुद सोशल नेटवर्किंग के साधन हैं, जिन्होंने आज के समय को सूचना की दृष्टि से क्रांतिकारी बना दिया है।

i. सोशल नेटवर्किंग साधनों के सदुपयोग से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावशाली व उपयोगी बनाया जा सकता है।

ii. इनकी सहायता से ज्ञान को सृजनात्मक, प्रयोगात्मक, विश्वसनीय व लचीला स्वरूप प्रदान किया जा सकता है।

iii. इस कम्प्यूटरीकृत साधन से तकनीकी और सामाजिक कौशल का विकास किया जा सकता है।

iv. इस साधन के उपयोग से बालकों में ज्ञान के प्राप्ति जिज्ञासा व चिन्तनता को विकसित किया जा सकता है।

(4) फेसबुक, ट्वीटर और यू-ट्यूब :- सोशल नेटवर्किंग के तरह फेसबुक, ट्वीटर और यू-ट्यूब सर्वाधिक लोकप्रिय साधन हैं, फेसबुक ऐसी लोकप्रिय सामाजिक वेबसाइट है। जिसमें पंजीकृत उपयोगकर्ताओं को अपनी प्रोफाइल, वीडियो, ऑडियो, सूचना भेजने व मित्रों से ऑनलाइन सम्पर्क स्थापित करने का अवसर प्राप्त होता है। यह सोशल नेटवर्क एक ऑन लाइन सार्वजनिक सम्प्रेषण साइट है, जिसे गूगल ने 1.65 बिलियन डॉलर में खरीद लिया था। आप इसे लोकप्रिय यू-ट्यूब के नाम से जाना जाता है।

—

Scanned with CamScanner

खोज विधि की अवधारणा

(iv) खोज या अन्वेषणात्मक विधि का आविष्कार या प्रतिपादक लंदन के प्रो. एच. ई. आर्मस्ट्रांग को माना जाता है। उन्होंने ही सबसे पहले इसका प्रारूप प्रस्तुत किया था। उनका विचार था कि मौलिक अनुसंधान और खोज ही विज्ञान का वास्तविक उद्देश्य है, ताकि वह अपने लिए स्वंय विज्ञानों के सिद्धांतों की खोज करे। यूनानी भाषा मे खोज कार्य को प्रकट करने के लिए 'Heuristic' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

खोज विधि का अर्थ — जैसा कि इस विधि के नाम से स्पष्ट होता है, इस विधि के अन्तर्गत छात्र अथवा बालक अध्ययन विषय के सम्बन्ध मे कोई खोज करता है अर्थात् इस विधि मे बालक एक 'खोजी' की भूमिका निभाता है तथा अध्यापक बालक या छात्र को खोज करने हेतू अभिप्रेरित करता है। इस विधि को व्यवस्थित रूप प्रदान करने का श्रेय प्रो. आर्मस्ट्रांग को जाता है इस विधि की उपयोगिता के सम्बन्ध मे उन्होंने कहा है कि "बालक को जहा तक संभव हो सके कम से कम बतलाया जाये तथा उसे स्वंय खोज करने के लिए अधिक से अधिक प्रेरित किया जाये।" अतः खोज विधि सामाजिक विज्ञान अध्ययन की एक महत्वपूर्ण विधि है, क्योकि यह विधि बालकों की खोजी प्रवृति को विकसित करती है तथा साथ ही छात्रो मे वैज्ञानिक तथा विवेचनात्मक दृष्टिकोण का निर्माण करती है।

Scanned with CamScanner

खोज विधि के उद्देश्य :- खोज प्रणाली का मुख्य उद्देश्य छात्रों में वैज्ञानिक तथा खोजी प्रवृत्ति का विकास करना है तथा छात्रों में विवेचनात्मक दृष्टिकोण का निर्माण करना है। खोज विधि के उद्देश्य के सम्बन्ध में रामबरन नामक शिक्षाविद् का मानना है कि, "इस विधि का उद्देश्यों केवल छात्रों को तथ्यों का ज्ञान प्राप्त करवा ही नहीं है, बल्कि इस विधि के द्वारा छात्रों को इस बात की जानकारी प्रदान करने का प्रयास करना है कि वे तथ्यों का ज्ञान किस प्रकार से प्राप्त कर सकते हैं तथा तथ्यों को नियमबद्ध किस प्रकार से किया जा सकता है तथा उनका उपयोग किस प्रकार से किया जा सकता है।"

खोज विधि के सोपान :- खोज विधि के सोपान निम्न प्रकार से समझा जा सकता है।

1. छात्रों के तथ्य एकत्रित करवाना।
2. निरीक्षण को तथ्यपरक रूप देना।
3. छात्रों से प्राप्त तथ्यों का सामान्यीकरण करना।
4. अंत में प्राप्त तथ्यों को लिखित रूप देना।
5. छात्रों द्वारा किये गये निरीक्षण तथा तथ्यों के आधार पर तुलना करवाना।

Scanned with CamScanner

Unit 1

(10)

प्रश्न : 2 सामाजिक विज्ञान का विभिन्न विषयों के साथ संबंधों की विवेचना कीजिए।

भूमिका :- सामाजिक विज्ञान कुछ सामाजिक विज्ञान विषयों का समूह मात्र नहीं है, अपितु इसका प्राकृतिक विज्ञान मनोविज्ञान, भाषा, कला व गणित जैसे वैज्ञानिक विषयों के साथ भी गहरा संबंध है। इन महत्वपूर्ण विषयों व सामाजिक विज्ञान के बीच संबंध को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है।-

(1) प्राकृतिक विज्ञान व सामाजिक विज्ञान :- आधुनिक समय में प्राकृतिक विज्ञान की उपलब्धियां बहुआयामी है। प्राकृतिक या भौतिक विज्ञान जैसे-जैसे कदम आगे बढ़ाया गया, वैसे-वैसे मनुष्य जाति के इतिहास को भी प्रभावित करता चला गया। प्राकृतिक विज्ञान की उपलब्धियों ने मनुष्य की सोच व व्यवहार में काफी परिवर्तन किया। वस्त्र, आभूषण व अन्य विलासिता का भौतिक सामान विज्ञान की महत्वपूर्ण देन है। आज हम इस विज्ञान के कारण ही एक छोटे से गाँव या नगर के स्थान पर अपने संबंधों को विश्व के दूसरे कोने के साथ जोड़कर समाज व संस्कृति और राजनीतिक स्थितियों व व्यवहार का आकलन करते है। प्राकृतिक या भौतिक विज्ञान के जहाँ मनुष्य को इतना कुछ दिया है, वही दूसरी ओर उसने भयानक आशंकाएं

भी पैदा कर दी है।
इसी प्रकार विज्ञान की अपनी सृजनात्मक और विध्वंसात्मक प्रकृति अपने शाश्वत रूप से आज भी विद्यमान है। स्वाभाविक रूप से समझा जा सकता है कि सामाजिक विज्ञान की करवटें और विज्ञान की गति एक-दूसरे के प्रति सापेक्ष रूप से संबंधित है।

(2) गणित व सामाजिक विज्ञान :- वैज्ञानिक विषयों की शिक्षा देने का महत्व आज के युग में लगातार बढ़ रहा है। माध्यमिक स्तर की शिक्षा में गणित शिक्षा का विशेष महत्व है। आज जीवन के कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है। जहां गणित की आवश्यकता न हो। इसलिए कोई भी समाज गणित के महत्व को झुठला नहीं सकता। बालक की सामाजिक उपयोगिता को ध्यान में रखकर ही गणित शिक्षण दिया जाता है। जीवन की विभिन्न स्थितियों के साथ गणित को संबंधित करके पढ़ाने से विद्यार्थियों को समाज का उपयोगी सदस्य बनाने में मदद मिलती है। डाकखाने में बचत खाता, बैंकिंग व घरेलू बजट आदि बनाने में गणित सहायता करता है।
अतः सामाजिक अध्ययन का गणित से भी महत्वपूर्ण संबंध है। गणित की प्रारंभिक जानकारी आगे राज्य तथा देश की न्याय-पालिका, विधानपालिका, कार्यपालिका व बजट प्रक्रिया आदि को

Scanned with CamScanner

समझने में सहायक सिद्ध होती है, जिससे विभिन्न समस्याओं को समझने में सहायता मिलती है। सामाजिक विज्ञान में प्रयुक्त होने वाली सारणियाँ तथा ग्राफ की भाषा अन्य कोई नहीं अपितु गणित की भाषा ही है।

(5) मनोविज्ञान व सामाजिक विज्ञान :- सामाजिक विज्ञान के अध्ययन का मुख्य उद्देश्य मानव के व्यवहार-गत परिवर्तनों का अध्ययन करना है। इसलिए मनोविज्ञान और सामाजिक विज्ञान के आपसी संबंधों को नकारा नहीं जा सकता है। समाज में होने वाले सभी परिवर्तन मानव के व्यवहार से संबंधित होते हैं। मनोविज्ञान विषय हमें मानव के व्यवहार, इच्छा व स्वभाव को समझने में हमारी काफी सहायता करता है। सामाजिक समरसता और पारस्परिक व्यवहार को समझने में मनोविज्ञान विषय की काफी उपयोगिता है। इसके माध्यम से यह स्पष्ट रूप से जाना जा सकता है कि आज के जटिल समाज का स्वरूप व संरचना का आधार क्या है? इस विषय के अध्ययन के माध्यम से बालकों में निर्माणात्मक प्रवृत्तियों का विकास किया जा सकता है। क्योंकि हम मनोविज्ञान विषय की सहायता से उनकी मनोवृत्ति का सही आकलन कर सकते हैं। मनोविज्ञान तथा सामाजिक विज्ञान दोनों मानव विकास के लक्ष्य पर केन्द्रित हैं। मनोविज्ञान सामाजिक विज्ञान के शिक्षण को सरलता, सरसता तथा सुन्दरता प्रदान करता है।

Scanned with CamScanner

निकलसन व राईट ने लिखा है कि, "सामाजिक विज्ञान बहुत विस्तृत विषय है और इसका अभिप्राय सारे संसार मे मनुष्य का वर्तमान जीवन है।"

(4) भाषा व सामाजिक विज्ञान :- भाषा के द्वारा मनुष्य, विचारों को ग्रहण और अभिव्यक्त करता है। भाषा साहित्य का माध्यम है और साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब होता है। भाषा की पाठ्य-सामग्री, कहानियाँ, कविताएं, आदि समाज के विभिन्न पहलुओं को प्रकट करती है। अध्यापक के लिए भाषा के बिना सामाजिक विज्ञान की शिक्षा देना असंभव है। भाषा वह माध्यम है, जिसमे अध्यापक सामाजिक विज्ञान की शिक्षा देता है। भाषा के द्वारा ही बालक सामाजिक प्रश्नों का चिंतन करके उन पर अपने विचार प्रकट करते है तथा सामाजिक विज्ञान के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करते है। भाषा वह साधन है, जिससे अध्यापक प्रश्न पूछकर, बोलकर, समाज की रचना तथा उसके परिवर्तन प्रक्रिया से बालकों को अवगत करवाता है। भाषा विद्यार्थियों को सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थितियों का भी ज्ञान प्रदान करती है। सामाजिक विज्ञान के शिक्षक अपनी विषय सामग्री उन लेखकों से भी लेते है, जिनकी साहित्यिक क्षेत्र मे ख्याति है। अतः कहा जा सकता है

Scanned with CamScanner

कि भाषा और सामाजिक विज्ञान में गहरा संबंध है।

(5) कला तथा सामाजिक विज्ञान :- सामाजिक विज्ञान शिक्षण का उद्देश्य बालकों में व्यक्तिगत व सामाजिक कुशलता की क्षमता उत्पन्न करना भी होता है। कला भी अपने स्वाभाविक रूप में इस उद्देश्य की पूर्ति करती है, कला शिक्षण बालकों की विभिन्नता तथा सौन्दर्यात्मक ज्ञान उपलब्ध करवाने में सहायता करता है। बालक को अच्छे मानव के रूप में विकसित करने में कला का विशेष योगदान होता है। महान चित्रकारों, संगीतकारों, नाट्यकारों व नक्काशीकारों के कार्यों की समझ कला से ही उत्पन्न होती है। यह स्वभाविक तथ्य है कि कलाकारों का मानव तथा समाज में सीधा संबंध होता है। जापान के सामाजिक इतिहास का विशेष महत्व उनके नाटकों तथा उत्सवों को लेकर ही है।
सामाजिक विज्ञान की विषय-सामग्री में चित्र, ग्राफ, नक्शे, आकृतियां, भवन, उद्योग, बांध परियोजना, समय चार्ट व मौसम जैसी कलात्मक रेखाओं का बहुत महत्व होता है। इन सबकी समझ हमें कला शिक्षण से ही प्राप्त होती है। कला के माध्यम से सामाजिक विज्ञान अध्यापक कला संबंधी अनेक कौशलों का विकास बालकों में कर सकता है। अतः कहा जा सकता है कि कला और सामाजिक विज्ञान में गहरा संबंध होता है।

Scanned with CamScanner

(6) अर्थशास्त्र और सामाजिक विज्ञान :- सामाजिक विज्ञान एवं अर्थशास्त्र भी अंतर्संबंधित है। अर्थशास्त्र के अन्तर्गत मनुष्य की आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है, जबकि सामाजिक विज्ञान अर्थ अर्थात् धन से संबंधित क्रियाओं का उल्लेख करता है। इन क्रियाओं का संबंध धन के वितरण, उपयोग, उत्पाद, उपभोग, बचत व निवेश आदि संबंधित क्रियाओं से होता है। आज के युग में अर्थ की महत्ता काफी बढ़ गई है, क्योंकि समाज की भौतिक उन्नति का बुनियादी आधार धन ही है। मनुष्य द्वारा की गई सभी धन से संबंधित क्रियाएं अर्थशास्त्र विषय के अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत आती है। मानव की तीन बुनियादी जरूरतें हैं - रोटी, कपड़ा और मकान। इसलिए समाज की यह जिम्मेदारी है कि वह मनुष्य की इन बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति करें। आर्थिक आवश्यकता सभी सामाजिक चरित्रों का मुख्य स्रोत है। समाज में भुखमरी उत्पन्न होने से पाप बढ़ते हैं, अशांति फैलती है तथा भूख से पीड़ित मानव कुछ भी करने के लिए विवश हो जाता है। इसलिए सामाजिक विज्ञान के माध्यम से बालकों को विभिन्न आर्थिक क्रियाओं की समझ देना आवश्यक हो जाता है। व्यक्ति की आर्थिक आवश्यकता का सीधा संबंध उसके सामाजिक जीवन से होता है।

निष्कर्ष :- उपरोक्त अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि सामाजिक विज्ञान का प्राकृतिक विज्ञान, गणित, मनोविज्ञान, भाषा व कला जैसे वैज्ञानिक व साहित्यिक विषयों के साथ गहरा संबंध है। सामाजिक विज्ञान इन विषयों से संबंधित सामग्री का ऐसा समन्वित और एकीकृत रूप है, जिसके द्वारा बालकों को अपने समाज तथा मानव संबंधों को समझने, समाज में अपने आपको अच्छी तरह व्यवस्थित तथा समाज और सम्पूर्ण मानव जाति को विकास के मार्ग पर चलने का समुचित अवसर प्राप्त होता है।

Unit II

प्रश्न 3 पाठ योजना की आवश्यकता व महत्व लिखिए व किसी एक उपविषय की पाठ योजना तैयार कीजिए।

भूमिका :- पाठ योजना का संबंध शिक्षण से पूर्व की अवस्था से होती है। इस अवस्था मे शिक्षक को शिक्षण से संबंधित विभिन्न क्रियाओं का नियोजन करना पड़ता है। साधारण भाषा मे शिक्षक अनुदेशनात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए जो क्रियाएं कक्षा मे करेगा, उसे नियोजित ढंग से लिख लेना ही 'पाठ-योजना' कहलाता है। कक्षा मे प्रवेश करने से पहले शिक्षक को अपनी पाठ की पूरी योजना तैयार कर लेनी चाहिए। यदि शिक्षक ने कक्षा मे जाने से पहले अपनी पाठ-योजना अच्छी तरह बना ली है तो वह पूरे आत्मविश्वास के साथ कक्षा मे अपने पाठ को पढ़ा सकता है।

डैविस के अनुसार, — "कक्षा में जाने से पहले शिक्षक की पूरी तैयारी कर लेनी चाहिए, क्योंकि शिक्षक की प्रगति के लिए कोई बात बाध्य नहीं है, जितनी की शिक्षण की अपूर्ण तैयारी।"

इस प्रकार कहा जा सकता है कि पाठ-योजना क्रिया की एक योजना है।

Scanned with CamScanner

पाठ - योजना की आवश्यकता

योजना जीवन के प्रत्येक पहलू में आवश्यक है। बिना योजना के किया हुआ काम धन, समय तथा शक्ति को व्यर्थ गंवाता है। पाठ-योजना की आवश्यकता को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है —

① उद्देश्यों को परिभाषित करने के लिए :- किसी भी विषय के शिक्षण के लिए व्यापक उद्देश्यों को परिभाषित करने के लिए पाठ-योजना बहुत ही सहायक सिद्ध होती है।

② सुसंगठित ज्ञान के लिए :- यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है कि यदि व्यक्ति को संगठित रूप से ज्ञान दिया जाए तो व्यक्ति उस ज्ञान को अधिक शीघ्रता एवं सुगमता से अर्जित करता है।

③ मानसिक शक्तियों के विकास के लिए :- पाठ-योजना द्वारा अध्यापक विद्यार्थियों की तर्क, विचार, निर्णय लेने तथा कल्पना शक्ति का विकास कर सकता है।

④ नए ज्ञान का आधार पूर्व ज्ञान :- नया ज्ञान प्राप्त करने के लिए पूर्व ज्ञान का आधार होना शिक्षण की सफलता का रहस्य हो सकता है। इसके लिए पाठ-योजना बहुत ही आवश्यक होती है।

⑤ शिक्षण को रुचिकर बनाने के लिए :- यदि पाठ सरल, स्पष्ट तथा रुचिकर हो तो बच्चे उसे जल्दी समझ सकते हैं तथा अध्यापक प्रभावशाली ढंग से पढ़ा सकता है।

Scanned with CamScanner

पाठ-योजना का महत्व

पाठ-योजना के महत्व को निम्नलिखित प्रकार से समझा जा सकता है —

① आत्मविश्वास पैदा करने के लिए :- अध्यापक यदि शिक्षण से पहले पाठ-योजना का निर्माण कर लेता है तो उसे कक्षा का सामना करते समय आत्मविश्वास की अनुभूति होती है। किसी भी परिस्थिति में नवीन शिक्षण कार्य तथा प्रयोग करते समय उसे भय का आभास नहीं होता।

② शिक्षण उद्देश्यों की स्पष्टता :- कक्षा में पढ़ाई जाने वाले विषय-वस्तु के शिक्षण उद्देश्यों की स्पष्टता का होना बहुत महत्वपूर्ण होता है। पाठ-योजना के प्रभाव से शिक्षक के पास निरर्थक बातें करने का समय नहीं होता, क्योंकि उसके सामने शिक्षण के उद्देश्य स्पष्ट होंगें तथा शिक्षक निरंतर इस बात के लिए प्रयत्नशील रहेगा कि इन उद्देश्यों को किस प्रकार अर्जित किया जाए।

③ समस्याओं की जानकारी :- अध्यापक पाठ-योजना के माध्यम से विषय-वस्तु से संबंधित पैदा होने वाली समस्याओं तथा कठिनाइयों के बारें में पहले से पता कर लेता है तथा उसके समाधान का उपाय भी कक्षा में जाने से पूर्व सोच लेता है।

Scanned with CamScanner

(4) पाठों की निरंतरता :- पाठ-योजना की सबसे बड़ी उपयोगिता यह है कि पढ़ाए जाने वाले विषयों की सभी उप-विषयों में एक निरंतरता बनी रहती है।

(5) शिक्षण-क्रियाओं की जानकारी :- कक्षा में शिक्षक को शिक्षण क्रियाओं क्रियाओं तथा प्रयोग होने वाली सहायक-सामग्री की पूर्ण जानकारी होनी आवश्यक है। यदि अध्यापक पाठ-योजना बनाता है तो इसे यह जानकारी हासिल हो जाती है। वह पहले से ही तय कर लेता है कि कक्षा में कौन-कौन सी शिक्षण-क्रियाएं करनी हैं।

(6) क्रमबद्ध कार्य की आदत :- पाठ-योजना से शिक्षक में क्रमबद्ध तरीके से कार्य करने की आदत का विकास होता है और उसमें वे सभी कौशल विकसित हो जाते हैं, जिनसे शिक्षक बड़ी तेजी से पाठ-योजना का होना निर्धारित कर सकें।

(7) उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए :- शिक्षक किस प्रकार स्वयं निर्मित उद्देश्यों को प्राप्त करे, इसके लिए पर्याप्त तैयारी और सोच-विचार के लिए पाठ-योजना का होना अति आवश्यक है।

(8) रूप-रेखा प्रदान करने के लिए :- पाठ योजना की आवश्यकता शिक्षकों के प्रशिक्षण-कार्यक्रम में भी महत्वपूर्ण होती है। शिक्षकों के प्रशिक्षण में पाठ-योजना कक्षा की क्रियाओं के लिए रूप-रेखा प्रदान करती है। यही रूप-रेखा शिक्षक को अपनी क्रियाएं करने में दिशा प्रदान करती है। अतः पाठ-योजना इन दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

Scanned with CamScanner

हरबर्ट उपागम मे पाठ-योजना की रूपरेखा तैयार

हरबर्ट उपागम मे पाठ-योजना की रूपरेखा को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। पाठ-योजना तैयार करते समय इस रूपरेखा का अनुसरण काफी उपयोगी होता है। हरबर्ट उपागम मे पाठ-योजना की रूपरेखाकिया को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है —

(1)

पाठ-योजना नः — 1

विद्यालय का नाम :— S.D Model School.

छात्राध्यापक / छात्राध्यापिका का नाम :— पुष्पा कुमारी

दिनांक	विषय	कक्षा	कालांश	अवधि
1-6-20	हिंदी	1	प्रथम	30 मिनट

(1) **कक्षा, विषय तथा उपविषय :—** सबसे पहले कक्षा, विद्यार्थियों का क्रमांक, विषय, उपविषय या प्रकरण निर्धारित किया जाता है। फिर शिक्षण स्तर कक्षा, दिनांक आदि निर्धारित होते है।

(2) **सामान्य उद्देश्य :—** विषय तथा शिक्षा से संबंधी उद्देश्य सामान्य उद्देश्यों के रूप मे लिखें जाते है।

(3) **विशिष्ट उद्देश्य :—** प्रकरण या अपविषय पढने का क्या उद्देश्य है, यह विशिष्ट उद्देश्य कहलाता है।

Scanned with CamScanner

(5) सहायक सामग्री :- सामान्य तथा विशेष सामग्री पाठ को प्रभावशाली बनाने में प्रयोग की जाती है।

(6) पूर्वज्ञान :- अध्यापक यह जानकारी रखता है कि इससे पहले विद्यार्थी कितना जानते है।

(7) प्रस्तावना :- विद्यार्थी का ध्यान केन्द्रित करने के लिए प्रश्न पूछता है।

(8) उद्देश्य कथन :- हर्बर्ट के उपागम में इस पद के अन्तर्गत अध्यापक पाठ की घोषणा करता है।

(9) प्रस्तुतीकरण :- विकासात्मक प्रश्नों द्वारा पाठ को प्रस्तुत किया जाता है।

(10) श्यामपट्ट कार्य :- शिक्षण शिक्षण बिंदुओं को श्यामपट्ट पर साथ-साथ लिखता है, आवश्यक होने पर रेखा चित्र भी बना सकता है।

(11) पुनरावृति :- पढ़ाए गए पाठ की दोहराई करवाने के लिए पुनरावृति करवाई जाती है।

गृहकार्य :- बच्चों को संबंधित शिक्षण पर गृहकार्य कार्य देना।

निष्कर्ष :- निष्कर्ष: कहा जा सकता है कि पाठ-योजना बनाने के बहुत से लाभ है परंतु ये सभी लाभ तभी प्राप्त होते है, जब उसे उचित ढंग से बनाया जाए। पाठ-योजना का निर्माण करते समय अध्यापक को उपरोक्त विशेषताओं का अवश्य ध्यान रखना चाहिए। इसके अंतर्गत अध्यापक का दर्शन, ज्ञान, उसकी अपने विद्यार्थियों के संबंध में जानकारी, शैक्षिक उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उसके प्रयास में मदद मिलती है।

Scanned with CamScanner

Unit III

प्रश्न: 5 निम्नलिखित का विस्तार से वर्णन कीजिए :-

(i) मानचित्रों के प्रकार व उपयोग

मानचित्र को मानव की सबसे प्रथम लिखित कृति माना जाता है। यह एक ऐसा उपकरण है, जिसके द्वारा संसार को क्षणिक समय मे एक सिरे से दूसरें तक देखा जा सकता है। सामाजिक विज्ञान मे मानचित्रों का प्रयोग किसी स्थान की दूरी, देश की सांस्कृतिक, भौगोलिक स्थिति, विश्व के विभिन्न देशों की स्थिति देश की नदी, समुद्र, जनसंख्या, पैदावार, खनिज पदार्थ, जलवायु आदि बातों को स्पष्ट ज्ञान आदि प्राप्त करने हेतू किया जाता है।

मान चित्र के प्रकार

सामाजिक विज्ञान जैसे विषय में अन्य किसी भी सहायक सामग्री की अपेक्षा मानचित्रों का विशेष महत्व है। स्कूल के बालको हेतू तैयार की जाने वाले सामाजिक विज्ञान की पाठ्य -पुस्तकों मे प्रायः अनेक चित्र तथा मानचित्र होते है। इसलिए मानचित्रों के प्रकार को जानना बहुत जरूरी है। मानचित्र मुख्य रूप से तीन प्रकार के होते हैं।

Scanned with CamScanner

(1) फ्लैट मानचित्र :- इन मानचित्रों की सहायता से विश्व के विभिन्न देशों की प्राकृतिक दशा, राजनीतिक दशा; तापक्रम, जनसंख्या, वर्षा, वातायात व आवागमन के साधनों का वितरण, इतिहास व भूगोल के पाठों का स्पष्टीकरण, लड़ाइयों, संधियों, सीमाओं, सेनाओं तथा यात्राओं के रास्ते आदि को प्रदर्शित किया जाता है।

(2) राहत मानचित्र :- इस प्रकार के मानचित्र का प्रयोग पृथ्वी के धरातल को प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है।

(3) स्कैच मानचित्र :- ये मानचित्रों के रेखाचित्र होते हैं। इन मानचित्रों को आवश्यकतानुसार प्रयोग में लाया जाता है।

मानचित्रों का उपयोग

मानचित्र की उपयोगिता को निम्न तथ्यों से आसानी से समझा जा सकता है।—

(1) पाठ को रुचिकर बनाने में सहायता प्रदान करना :- मानचित्र शिक्षण को रुचिकर बनाने में सहायता प्रदान करते हैं, क्योंकि इससे पाठ ठोस तथा यथार्थ की ओर अग्रसर होता है।

(2) उपयुक्त जानकारी :- मानचित्र द्वारा पृथ्वी के धरातल से संबंधित भागों को प्रदर्शित किया जा सकता है। कौन-

Scanned with CamScanner

कथन स्थान दूसरे स्थान से कितना दूरी पर है? किसी विशेष फसल, खनिज संपदा आदि का वितरण देश या संसार की दृष्टि से कौन होता है? इस प्रकार की बहुत सी बातों की जानकारी प्रदान करने की दृष्टि से मानचित्रों से उपयुक्त और कोई साधन नहीं।

(3) कठिन ज्ञान सरल बन जाता :- मानचित्रों की सहायता से कठिन ज्ञान भी सरल बन जाता है, जैसे विभिन्न राज्यों की सीमाओं का ज्ञान, विभिन्न राजधानियों का ज्ञान आदि मानचित्रों द्वारा सरलता से कराया जा सकता है।

(4) जलवायु तथा वनस्पति की जानकारी के लिए :- किसी भी स्थान की जलवायु, वनस्पति आदि की जानकारी मानचित्र द्वारा सरलता से प्राप्त की जा सकती है।

निष्कर्ष :- निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सामाजिक विज्ञान विषय के शिक्षण में मानचित्रों की उपयोगिता अन्य विषयों की अपेक्षा सर्वाधिक होती है।

Scanned with CamScanner

(ii) पाठ्य-पुस्तकें एवं संदर्भ पुस्तकें

आज शिक्षा के कई स्तरों - शिशु, प्राथमिक, निम्न माध्यमिक, माध्यमिक, वरिष्ठ माध्यमिक, महाविद्यालय व विश्वविद्यालय में बांटा गया है और प्रत्येक स्तर के लिए भिन्न-भिन्न विषयों की पाठ्यचर्या पर अब भिन्न-भिन्न पुस्तकों का निर्माण हुआ है। इन पुस्तकों को हम पाठ्य-पुस्तक कहते हैं। इस प्रकार पाठ्य-पुस्तकें वे हैं जो किसी स्तर के बच्चों के पाठ्यचर्यानुसार तैयार की जाती हैं। पाठ्य-पुस्तकों के अतिरिक्त संदर्भ पुस्तकें भी शिक्षा के क्षेत्र में काफी उपयोगी होती हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में पाठ्यपुस्तक ही सामाजिक विज्ञान शिक्षण का मुख्य आधार है। हैरीलिकर के अनुसार - "पाठ्यपुस्तक ज्ञान, अनुभवों, विचारों, प्रवृत्तियों तथा मूल्यों के संचय का साधन है।"

पाठ्य-पुस्तक की आवश्यकता एवं महत्व

सभी विषयों के शिक्षण में पाठ्यपुस्तकों का महत्वपूर्ण योगदान होता है, परंतु सामाजिक विज्ञान विषय की विस्तृत प्रकृति के कारण इस विषय के शिक्षण में इनकी विशेष आवश्यकता व उपयोगिता है।

(1) शिक्षा प्रक्रिया का व्यवस्थित होना :- पाठ्य पुस्तकों की सहायता से शिक्षा की प्रक्रिया बड़े व्यवस्थित ढंग से चलती है। कक्षा विशेष की पाठ्यचर्या को स्पष्ट करने,

Scanned with CamScanner

अध्यापक के लिए वर्षभर की योजना बनाने व बच्चों की बढ़कने से रोकने मे इनकी विशेष आवश्यकता तथा उपयोगिता होती है।

② शिक्षण मे एकरूपता लाने के लिए :- राष्ट्र विकास के लिए शिक्षा मे एकरूपता का होना बहुत जरूरी है। सभी विद्यार्थियों का ज्ञान स्तर व परिवेश अलग-अलग होने के उपरांत भी पाठ्य पुस्तकों की सहायता से शिक्षण मे एकरूपता लाई जा सकती है।

③ पुस्तकालयों की अच्छी स्थिति न होना :- भारत मे अधिकतर स्कूलों मे पुस्तकालय इस स्थिति में नही है कि वहा पाठ्यचर्या से संबंधित पुस्तके उपलब्ध हो। इन स्कुलो मे पढ़ने वाले छात्रो की आर्थिक स्थिति भी ऐसा नही है कि वे अपने स्तर पर संदर्भ पुस्तको की व्यवस्था कर सकें।

④ परीक्षा लेने मे सहायक :- पाठ्य-पुस्तक बच्चो के ज्ञान की परीक्षा लेने मे भी अध्यापक की सहायता करती है। ये परीक्षा मे पूछे जाने वाले ज्ञान की सीमा निश्चित करती है।

⑤ माता-पिता की निरक्षरता :- पाठ्य पुस्तके एक तरह से परिवार की निरक्षरता के विरुद्ध एक बीमा है। आज भी भारत मे साक्षरता की स्थिति कम है। इस स्थिति मे निरक्षर माता-पिता चाहकर भी घर पर बालकों को शिक्षण मे मदद नहीं कर सकते। ऐसी स्थिति मे पाठ्य-पुस्तक ही बालकों के काम आती है। घर पर अध्यापक की कमी को यही पाठ्य-पुस्तकें करती है।

Scanned with CamScanner

Unit IV

प्रश्न: 5 सामाजिक विज्ञान में मूल्यांकन के अर्थ महत्व व प्रकारों को लिखिए।

मूल्यांकन का अर्थ :- मूल्यांकन शब्द का अर्थ मापन से कहीं अधिक व्यापक है, जिसमे गुणात्मक तत्वों को भी संख्यात्मक रूप मे बताया जाता है। मूल्यांकन के अंतर्गत परीक्षणों के सिद्धांत, उनकी रचना, मानकीकरण, प्रशासन एवं उनके माध्यम से प्राप्त परिणाम की व्याख्या आदि को सम्मिलित किया जाता है। मूल्यांकन से तात्पर्य पाठ्यक्रम के लिए निर्धारित उद्देश्यों और मूल्यों के लिए प्रयासरत विद्यार्थियों की प्रगति का जांच करना। शिक्षा के उद्देश्यों शैक्षणिक अनुभवो एवं मूल्यांकन मे बहुत नजदीकी संबंध है।

निम्न लिखित परिभाषाएँ मूल्यांकन के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करती है—

i/ क्यूलैन एवं हाना के अनुसार,— "मूल्यांकन ऐसी प्रक्रिया है, जिसके द्वारा स्कूल में प्रगति करते हुए विद्यार्थियों के व्यावहार परिवर्तन के साक्ष्यों को एकत्रित करके उनकी व्याख्या की जाती है।"

ii/ कोठारी कमीशन के अनुसार,— "अब यह माना जाने लगा है कि मूल्यांकन एक अनवरत प्रक्रिया है। यह सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली का अभिन्न अंग है और शिक्षण लक्ष्यों से घनिष्ट रूप से संबंधित है।"

मूल्यांकन के महत्व

मूल्यांकन के महत्व को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है।

① शिक्षण मे सुधार :- उद्देश्यों तथा अधिगम अनुभवों का मूल्यांकन से गहरा संबंध है। यह इस बात की जानकारी देता है कि उद्देश्य प्राप्त हुए है अथवा नही। कभी भी कक्षा मे अपनाई जाने वाली शिक्षण विधियों और पद्धतियों मे क्या सुधार की आवश्यकता है, शिक्षण कितना प्रभावशाली तथा सार्थक है।

② लक्ष्यों को स्पष्ट करना :- मूल्यांकन एक ऐसी प्रक्रिया है जो शिक्षा के लक्ष्यों को साफ करने मे सहायता करती है। इसके द्वारा अध्यापको को अपने विषय के विभिन्न प्रकरणो का विश्लेषण करने मे मदद मिलती है।

③ बच्चों के व्यक्तित्व की परख :- मूल्यांकन व्यक्तित्व की परख करने मे मदद करता है, विद्यार्थियों के लक्ष्य का निर्धारण करता है। साथ ही उनकी रुचियों, योग्यताओं, बुद्धि सामाजिक एवं नैतिक गुणों के विकास मे मापन का कार्य करता है।

④ छात्रों के वर्गीकरण मे सहायता :- मूल्यांकन के आधार पर विद्यार्थियो को विभिन्न वर्गों मे बांटना मूल्यांकन का एक अन्य लक्ष्य है। एक प्रकार की बुद्धि लब्धि रखने वाले छात्रो को एक वर्ग मे रखा जा सकता है।

Scanned with CamScanner

(5) पाठ्यक्रम मे सुधार करना :- मूल्यांकन द्वारा पाठ्यक्रम मे सुधार किए जाते हैं जो परिवर्तनो द्वारा सम्भव है। पाठ्यक्रम को समय-समय पर बदलते रहना चाहिए, जिससे नई विषय-वस्तु का समावेश होता है। ऐसा करने में मूल्यांकन हमारी सहायता करता है।

(6) सीखने को प्रभावित करना :- यह विद्यार्थियों की विषय-वस्तु प्रश्नों व उत्तर की दोहराई करने मे सहायता करता है, इसमे उनकी सीखने की आदत मे बदोतरी होती है। यह बालकों को व्यावहारिक प्रयोग करने का भी अवसर प्रदान करता है।

(7) अनुसंधान के लिए सामग्री उपलब्ध करवाना :- परीक्षाएं अनुसंधान कार्य के लिए पर्याप्त सामग्री प्रदान करती है। इसी के आधार पर शिक्षा और परीक्षा पद्धति में कई प्रकार के सुधार किए जाते हैं।

(8) प्रेरणात्मक रूप में सामने आना :- परीक्षाओं द्वारा विद्यार्थियों को वे लक्ष्य स्पष्ट करना है, जिन्हें इन्हें प्राप्त करना होता है। यह बालको मे परीक्षा मे पास होने के लिए परिश्रम करने की भावना को पैदा करता है।

(9) प्रगति की रिपोर्ट तैयार करना :- विद्यालय व अन्य परीक्षा परिणामो के आधार पर ही विद्यार्थियों द्वारा प्राप्तांक की प्रगति-रिपोर्ट उनके माता-पिता को भेजी जाती है। इन परिणामों के आधार पर समाज शिक्षा की सफलताओं और असफलताओं का आंकलन करता है।

Scanned with CamScanner

मूल्यांकन के प्रकार

मुख्यतः मूल्यांकन दो प्रकार का होता है — निर्माणात्मक मूल्यांकन तथा संकलनात्मक मूल्यांकन।

① निर्माणात्मक मूल्यांकन :- निर्माणात्मक मूल्यांकन बच्चो के अधिगम को मापता है और ठीक समय पर आवश्यक प्रयास एवं शक्ति के लिए प्रेरित करता है। प्रत्येक इकाई के शिक्षण के अंतर्गत उपरांत निर्माणात्मक परीक्षण किया जाता है। इसके द्वारा इकाई के पूरा होने से पहले आने वाली कठिनाईयो को पहचानने मे मदद मिलती है। छात्र को जब किसी इकाई मे निपुणता नहीं प्राप्त होती है। तो निर्माणात्मक मूल्यांकन उनकी कठिनाई को दूर करने मे मदद करते है। परिणाम स्वरूप उन्हे इकाई में निपुणता प्राप्त करने मे सुविधा होती है। यह मूल्यांकन की ऐसी प्रक्रिया है, जिसके द्वारा समय तथा स्थिति के अनुसार पाठ्यक्रम मे परिवर्तन लाया जा सकता है। दूसरे शब्दो में निर्माणात्मक मूल्यांकन का मुख्य लक्ष्य पाठ्यक्रम मे सुधार लाकर उसका विकास करना है।

निर्माणात्मक मूल्यांकन शिक्षक और विद्यार्थी दोनो के लिए अत्यंत लाभदायक है। यह विद्यार्थी के अधिगम के मूल्यांकन मे भी काफी सहायक है।

Scanned with CamScanner

(2)

संकलनात्मक मूल्यांकन

संकलनात्मक मूल्यांकन का संबंध पाठ्यक्रम के परिणाम को मापने से है। पाठ्यक्रम की रचना विशेष लक्ष्यों के मद्य नजर रखकर की जाती है। इन लक्ष्यों मे शिक्षा द्वारा समाज का विकास तथा बच्चों की चहुँमुखी उन्नति की जाती है। संकलनात्मक मूल्यांकन का लक्ष्य बच्चों मे पाठ्यक्रम मे सुधार के परिणामस्वरूप उनके मूल्यांकन से उसमें सुधार करना है। इस प्रकार के मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य अधिगम इकाई के निपुणता स्तर को मालूम करना है और कमियों के बारे मे बताना है कि जो एक बच्चों द्वारा निपुणता प्राप्त करते समय आती है। इसके अतिरिक्त संकलनात्मक मूल्यांकन बच्चों को उनके उद्देश्य की उपलब्धि के अनुसार कोटिकृत करता है। बच्चों मे कैसे परिवर्तन होता है, इस इससे संबंधित है। इसका मुख्य लाभ यह भी है कि परिवर्तन पूरा हो चुका है और शेष बची कमियों मे सुधार किया जा सकता है, कोर्सों की सफलता की प्रकल्पना एवं प्रमाणीकरण को सम्मिलित किया जा सकता है। संकलनात्मक मूल्यांकन की निपुणता अधिगम में बच्चों को विभिन्न श्रेणियों में विभाजित करना है।

शिक्षक को चाहिए कि वह सभी बच्चों की निपुणता स्तर को जानकर उनमें निपुणता विकसित करने के लिए यथासम्भव प्रयास करें।

Scanned with CamScanner

निष्कर्ष :- निर्माणात्मक मूल्यांकन एवं संकलनात्मक मूल्यांकन दोनों साथ-साथ चलते रहते हैं। जैसे-जैसे पाठ्यक्रम का विस्तार होता जाता है, वैसे-वैसे मूल्यांकन भी विस्तृत होता जाता है। परम्परागत पाठ्यक्रम से तात्पर्य केवल कुछ विषयों को पढ़ने से लिया जाता था तथा मूल्यांकन भी उन्हीं विषयों तक सीमित था। लेकिन आज कल पाठ्यक्रम में शैक्षिक एवं गैर शैक्षिक विषयों का महत्व भी बढ़ गया है और इसी तरह मूल्यांकन का क्षेत्र भी व्यापक हो गया है। इसलिए निर्माणात्मक मूल्यांकन के बिना संकलनात्मक मूल्यांकन अधूरा है, क्योंकि ये दोनों एक-दूसरे की पूर्ति करते हैं।

Scanned with CamScanner